तुलसीदास

जन्म	:	1543 ।
निधन	:	1623 ।
जन्म-स्थान	:	राजापुर, बाँदा, उत्तरप्रदेश ।
मूल नाम	:	रामबोला ।
माता-पिता	:	हुलसी एवं आत्माराम दुबे ।
पत्नी	:	रत्नावली (विवाह के कुछ ही समय बाद वैराग्य के कारण विछोह) ।
प्रतिपालिका दासी	:	चुनियाँ, जिसने जन्म के बाद परिवार द्वारा परित्यक्त होने पर पालन-पोषण किया ।
दीक्षा गुरु	:	नरहरि दास, सूकरखेत के वासी, गुरु ने विद्यारंभ कराया ।
शिक्षा गुरु	:	शेष सनातन, काशी के विद्वान ।
शिक्षा	:	चारों वेद, षड्दर्शन, इतिहास, पुराण, स्मृतियाँ, काव्य आदि की शिक्षा काशी में पंद्रह वर्षों तक प्राप्त की ।
निर्णायक घटना	:	काशी में विद्याध्ययन के बाद जन्मभूमि आकर कथावाचक व्यास बन गए । दीनबंधु पाठक ने व्यक्तित्व और वक्तृता से प्रभावित होकर अपनी पुत्री रत्नावली से विवाह कर दिया । पत्नी से प्रगाढ़ प्रेम और आसक्ति के कारण फटकारे जाने पर विरक्त हो गए और गृहस्थ जीवन एवं घर का परित्याग कर दिया ।
स्थाई निवास	:	काशी में ।
तीर्थयात्राएँ	:	सूकरखेत, अवध, चित्रकूट, प्रयाग, मथुरा-वृंदावन, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, बद्रीनाथ, नैमिषारण्य मिथिला, जगन्नाथपुरी, रामेश्वर आदि प्रमुख तीर्थों की यात्राएँ समय-समय पर काशीवास करते हुए ही संपन्न कीं ।
मित्र और स्नेही	:	अब्दुर्रहीम खानखाना, महाराजा मानसिंह, नाभादास, दार्शनिक मधुसूदन सरस्वती, टोडरमल आदि ।
कृतियाँ	:	रामलला नहछू, वैराग्य संदीपिनी, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामाज्ञाप्रश्न, दोहावली, कवितावली, गीतावली, श्रीकृष्ण गीतावली, रामचरितमानस, विनय पत्रिका । इनके अतिरिक्त 44 छंदों की हनुमान बाहुक रचना को कवितावली का ही अंग माना जाता है । उसे स्वतंत्र करने पर कुल 13 छोटी-बड़ी कृतियाँ होती हैं । इनके अतिरिक्त कुछ अन्य कृतियाँ भी बताई जाती हैं । कुल 12 या 13 कृतियों की प्रामाणिकता असंदिग्ध ।
मानस का रचना समय	:	रचनारंभ तिथि सं० 1631 (1574 ई०) चैत्र शुक्ल नवमी मंगलवार रामजन्म की तिथि पर, अयोध्या में कवि की 31 वर्ष की अवस्था में । रचना 1633 (1576 ई0) अगहन शुक्ल पंचमी–राम सीता विवाह की तिथि को कुल 2 वर्ष 7 माह 26 दिन में पूर्ण हुई ।
व्यक्तित्व	:	विनम्र, मृदुभाषी, गंभीर और शांत स्वभाव के गौरवर्ण के सुदर्शन व्यक्ति थे जिनके वक्षस्थल पर तुलसी की बड़ी-बड़ी गुरियों वाली माला रहती थी । वे कौपीन पहनते थे । 'राम' शब्द के 'रा' पद का उच्चारण होते ही रोमांचित हो उठते थे । अपना प्रसिद्ध पद ''भरत भए ठाढ़े कर जोरि' अनुराग भरे प्रगाढ़ स्वर में गद्गद् कंठ से गाया करते थे ।

गोस्वामी तुलसीदास हिंदी के शीर्षस्थ जातीय महाकवि हैं । सार्वभौम काव्य प्रतिभा से संपन्न महाकवि पर,

और इनके काव्य पर, हिंदी भाषा, साहित्य और समाज को गर्व है । हिंदी समाज और संस्कृति पर इनकी छाप गहरी और अमिट है । गोस्वामी तुलसीदास हिंदी के मध्यकालीन भक्तिकाव्य की सगुण भक्तिधारा की रामभक्ति शाखा के प्रधान कवि हैं । उनका महाकाव्य 'रामचरितमानस' हिंदी की श्रेष्ठतम प्रबंधात्मक कृति है जिसमें संपूर्ण परंपरा, युगजीवन, समाज एवं संस्कृति की समन्वित संश्लिष्ट अभिव्यक्ति हुई है । रामकथा को लेकर लिखे गए काव्यों में आदिकवि वाल्मीकि की 'रामायण' के बाद 'रामचरितमानस' ही सर्वाधिक सफल, लोकप्रिय एवं उत्कृष्ट कृति है । शायद इसीलिए आज 'रामायण' कहने पर मानस का ही बोध होता है और गोस्वामी जी को वाल्मीकि का अवतार कहा जाता रहा है –

''कलि कुटिलजीव निस्तार हित वालमीक तुलसी भयो''

गोस्वामी जी का जीवन अत्यंत यातना और संघर्ष में गुजरा था । बचपन में ही अनाथ होकर भिक्षाटन करते हुए वे साधुओं की मंडली से जा लगे और उनके साथ देशाटन करते रहे । स्वामी रामानंद की शिष्य परंपरा के उनके गुरु ने शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था की । युवावस्था में उनका विवाह भी हुआ था । वे कथावाचन की वृत्ति से अपनी गृहस्थी चलाते थे । शीघ्र ही गृहस्थ जीवन का परित्याग कर वे विरक्त साधु जीवन में चले आए । इस जीवन में व्यापक परिभ्रमण करते हुए उन्होंने लोकजीवन से संपृक्ति और तादात्म्य स्थापित किया । उनके काव्यों में लोकजीवन के व्यापक, बहुविध अंतरंग ज्ञान और अनुभव की अभिव्यक्ति हुई है । स्पष्ट है कि इसके पीछे उनका व्यापक पर्यवेक्षण अनुभव और अध्ययन था ।

गोस्वामी जी की संवेदना गहन और अपरिमित थी, अंतर्दृष्टि सूक्ष्म और व्यापक थी, विवेक प्रखर और क्रांतिकारी था । कवि में इतिहास एवं संस्कृति का व्यापक परिप्रेक्ष्यबोध और लोकप्रज्ञा थी । इन युगांतरकारी बौद्धिक, नैतिक रचनाओं द्वारा कवि ने ऐसा आदर्श उपस्थित कर दिया जो अतुलनीय है ।

गोस्वामी जी ने अपने युग की प्रमुख साहित्यिक भाषाओं–अवधी एवं ब्रज दोनों को अपनाया । सामान्यत: प्रबंध रचना के लिए अवधी और गीतिकाव्य के लिए ब्रजभाषा । किंतु उन्होंने इन काव्यभाषाओं में अन्य बोलियों के शब्दों, मुहावरों और अन्य भाषातत्त्वों के सम्मिश्रण से एक ऐसी व्यापक साहित्य-भाषा विकसित की जिसमें संप्रेषण और संवाद की अधिक क्षमता थी और जो आगे की भाषा के लिए आधार बन सकी ।

काव्यशैलियों में भी उन्होंने व्यापक सूझबूझ, उदारता, मनस्विता और लोकवाद का परिचय दिया । प्रबंध और गीति शैलियों को अपनाते हुए उन्होंने अपने युग की दो महान कृतियाँ–'रामचरितमानस' और 'विनय पत्रिका' की रचना की । परंपरा से आते हुए दोहा, सोरठा, चौपाई, कवित्त आदि छंदों को रचना का आधार बनाते हुए उन्होंने अपने समय में प्रचलित प्राय: सभी शास्त्रीय और लोकछंदों तथा शैलियों को अपनाया । लोकसंस्कृति के चित्रण के प्रति विशेष रुझान के कारण सोहर, नहछू, विवाह आदि सभी तरह के रीति-रिवाजों और आचार व्यवहारों का उन्होंने चित्रण किया तथा उन अवसरों पर गाए जाने वाली गीतिशैलियों को काव्य में समाहित किया । इन अभिव्यक्ति पद्धतियों द्वारा उन्होंने राम और उनकी कथा के प्रति अनुराग और भक्ति की लोकपावन गंगा बहा दी । एक भक्तकवि और संत होते हुए भी उन्हें एक महान लोकनायक की प्रतिष्ठा प्राप्त है । हिंदी जनता के हृदय में शताब्दियों से वे विराज रहे हैं और लोकमानस में जो स्थान उन्हें प्राप्त हुआ है उसे फिर कोई दूसरा न पा सका ।

◆ ◆ ◆

"तुलसी का काव्य मध्यकालीन उत्तर भारत का सबसे प्रामाणिक संदर्भकोश है । उसमें तुलसी द्वारा देखा और समझा हुआ भारत मौजूद है । इसमें उसकी विषमताएँ, अच्छाइयाँ–बुराइयाँ, सुख-दुख भी हैं और उसकी आशा-आकांक्षा भी मौजूद हैं ।"

–विश्वनाथ त्रिपाठी

पद

(1)

कबहुँक अंब अवसर पाइ ।
मेरिओ सुधि द्याइबी कछु करुन-कथा चलाइ ।।
दीन, सब अँगहीन, छीन, मलीन, अघी अघाइ ।
नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी-दास कहाइ ।।
बूझिहैं 'सो है कौन', कहिबी नाम दसा जनाइ ।
सुनत रामकृपालु के मेरी बिगारिऔ बनि जाइ ।।
जानकी जगजननि जन की किए बचन-सहाइ ।
तरै तुलसीदास भव तव-नाथ-गुन-गन गाइ ।।

(2)

द्वार हौं भोर ही को आजु ।
रटत रिरिहा आरि और न, कौर ही तें काजु ।।
कलि कराल दुकाल दारुन, सब कुभाँति कुसाजु ।
नीच जन, मन ऊँच, जैसी कोढ़ में की खाजु ।।
हहरि हिय में सदय बूझयो जाइ साधु-समाजु ।।
मोहुसे कहुँ कतहुँ कोउ, तिन्ह कहयो कोसलराजु ।।
दीनता-दारिद दलै को कृपाबारिधि बाजु ।
दानि दसरथरायके, तू बानइत सिरताजु ।।
जनमको भूखो भिखारी हौं गरीबनिवाजु ।
पेट भरि तुलसिहि जेंवाइय भगति-सुधा सुनाजु ।।

अभ्यास

पद के साथ

1. 'कबहुँक अंब अवसर पाई ।' यहाँ 'अंब' संबोधन किसके लिए है ? इस संबोधन का मर्म स्पष्ट करें ।
2. प्रथम पद में तुलसी ने अपना परिचय किस प्रकार दिया है, लिखिए ।
3. अर्थ स्पष्ट करें–

   (क) नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी-दास कहाइ ।

   (ख) कलि कराल दुकाल दारुन, सब कुभाँति कुसाजु ।
नीच जन, मन ऊँच, जैसी कोढ़ में की खाजु ।।

   (ग) पेट भरि तुलसिहि जेंवाइय भगति-सुधा सुनाजु ।
4. तुलसी सीता से कैसी सहायता माँगते हैं ?
5. तुलसी सीधे राम से न कहकर सीता से क्यों कहलवाना चाहते हैं ?
6. राम के सुनते ही तुलसी की बिगड़ी बात बन जाएगी, तुलसी के इस भरोसे का कारण क्या है ?
7. दूसरे पद में तुलसी ने अपना परिचय किस तरह दिया है, लिखिए ।
8. दोनों पदों में किस रस की व्यंजना हुई है ?
9. तुलसी के हृदय में किसका डर है ?
10. राम स्वभाव से कैसे हैं, पठित पदों के आधार पर बताइए ।
11. तुलसी को किस वस्तु की भूख है ?
12. पठित पदों के आधार पर तुलसी की भक्ति-भावना का परिचय दीजिए ।
13. 'रटत रिरिहा आरि और न, कौर ही तें काजु ।' –यहाँ 'और' का क्या अर्थ है ?
14. दूसरे पद में तुलसी ने 'दीनता' और 'दरिद्रता' दोनों का प्रयोग क्यों किया है ?
15. प्रथम पद का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए ।

पद के आस-पास

1. दूसरे पद में तुलसी ने कलि काल का उल्लेख किया है, कवितावली में भी इसका उल्लेख है, कवितावली से एक छंद यहाँ प्रस्तुत है । दोनों पदों की तुलना करते हुए अपने विचार दें ।

   खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी ।
जीविका-बिहीन लोग सीद्यमान, सोच–बस,
कहैं एक एकन सों कहाँ जाई का करी ?
वेद हू पुरान कही, लोक हू बिलोकियत,
साँकरे सबै पै राम रावरे कृपा करी ?
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु !
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी ।।
2. विनय पत्रिका की रचना तुलसी ने अपने जीवन के उत्तरार्ध में की है, तुलसी के जीवन के विषय में जानकारियाँ एकत्र करें और एक लेख के रूप में इसे कक्षा में प्रस्तुत करें ।
3. प्रसिद्ध कथाकार अमृतलाल नागर ने तुलसी को केंद्र में रखकर 'मानस का हंस' उपन्यास लिखा है, इस उपन्यास को उपलब्ध कर पढ़ें ।

4. क्या आपने कभी लोगों को समूह में बैठकर वाद्यवृंद के साथ रामायण गाते हुए सुना है ? अपने अनुभव का वर्णन करें ।
5. दोनों पदों में तुलसी का 'आत्म' प्रकट है, यहाँ कवितावली से एक छंद प्रस्तुत है जिससे उनकी मानसिक बनावट का पता चलता है । इस पद के आधार पर तुलसी का स्वभाव कैसा प्रतीत होता है ? लिखिए ।

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोलहा कहो कोऊ ।
काहू की बेटी सों बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ ।
तुलसी सरनाम गुलाम है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ।
माँगि कै खैबो मसीत को सोइबो, लैबे को एक न दैबे को दोऊ ॥

6. 'तुलसी जयंती' किस तिथि को पड़ती है ? अपने विद्यालय में उस तिथि को 'तुलसी जयंती समारोह' आयोजित करें ।
7. क्या तुलसी आज प्रासंगिक हैं, उदाहरणों के साथ अपना पक्ष रखें । 'तुलसी : मेरे लिए' विषय पर एक निबंध लिखें और इसे अपने वर्ग में प्रस्तुत करें ।
8. अनेक गायकों ने 'मानस' और 'विनय पत्रिका' के पद गाए हैं । इनमें मुकेश, छन्नूलाल मिश्र, हरिओम शरण मुख्य हैं । इनके कैसेट सुनकर अपनी प्रतिक्रिया लिखें ।

भाषा की बात

1. दोनों पदों से सर्वनाम पद चुनें ।
2. दूसरे पद से अनुप्रास अलंकार के उदाहरण चुनें ।
3. पठित अंशों से विदेशज शब्दों को चुनें ।
4. पठित पद किस भाषा में हैं ?
5. 'कोढ़ में खाज होना' का क्या अर्थ है ?
6. निम्नलिखित शब्दों का खड़ी बोली रूप लिखें–
   जनमको, हौं, तुलसिहि, भगति, मोहुसे, कहुँ, कतहुँ

शब्द निधि

कबहुँक	:	कभी	काजु	:	कार्य
अंब	:	माँ	कलि	:	कलियुग
मेरिओ	:	मेरी भी	कराल	:	भीषण, कठिन
सुधि	:	याद	दुकाल	:	बुरा समय (दुष्काल)
द्याइबी	:	दिला देना	दारुन	:	भयानक, असह्य
छीन	:	क्षीण, दुर्बल	कुभाँति	:	बुरी तरह
अघी	:	पापी	कुसाजु	:	अव्यवस्थित, दुर्गतिग्रस्त
प्रभु-दासी	:	प्रभु की दासी (सीता के लिए)	हहरि	:	कराह, हृदय की पीड़ा
बिगारिओ बनि जाइ	:	बिगड़ा हुआ बन जाएगा	हिय	:	हृदय
हौं	:	मैं	दारिद	:	दरिद्रता
रिरिहा	:	रिरियाता	कृपाबारिधि	:	कृपा सिंधु
आरि	:	आश्रय, अड़ान	जेंवाइय	:	खिलाइए
कौर	:	भोजन, निवाला	सुनाजु	:	सु+अनाजु (अच्छा भोजन)